IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# णिच् प्रत्यय का अर्थ एवं तन्निष्ठ प्रयोग

**डॉ० मीरा कुमारी**

सहायक प्राध्यापिका (अतिथि शिक्षक)

संस्कृत विभाग,
रामेश्वर महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

**सारांश** – अष्टाध्यायी के रचयिता सुप्रसिद्ध वैयाकरण महर्षि पाणिनि ने धातुपाठ में पठित गम्, पठ्, खाद् इत्यादि की धातुसंज्ञा की है। धातुसंज्ञा विधायक सूत्र 'भूवादयो धातवः' से तिबादि प्रत्यय होकर पठति, खादति इत्यादि रूप होते हैं। पठति–पढ़ता है, का धातुरूप भूवादयो धातवः से तिबादि प्रत्यय होकर बनता है; किन्तु पाठयति– पढ़ाता है, इस स्वरूप का निर्माण 'भूवादयो धातवः' से सम्भव नहीं; क्योंकि धातुपाठ में पठ् को पढ़ा गया है, पाठि को नहीं। ऐसे धातु जिनका पाठ धातुपाठ में नहीं किया गया है उसका धातुस्वरूप विनिर्माण के लिए 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा कर पाठयति, गमयति इत्यादि स्वरूप होते हैं।

अष्टाध्यायी में गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' सूत्र से लेकर 'कमेर्णिङ्.' सूत्र तक सनादि 12 प्रत्ययों का विधान किया गया है। इन्हीं सनादि प्रत्ययों में णिच् भी एक प्रत्यय है। अतः धातुसंज्ञा विधायक सूत्र हैं – (1) भूवादयो धातवः' (2) सनाद्यन्ता धातवः। सनादिप्रत्यय में से णिच् प्रत्यय से निष्पन्न स्वरूप की 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा होती है, फलस्वरूप तिबादि प्रत्यय होकर पाठयति, गमयति इत्यादि स्वरूप का विनिर्माण होता है। पाँच वृत्तियों में सनाद्यन्त भी एक वृत्ति है जिसके कारण अर्थसंश्लिष्ट होते हैं।

**मुख्य शब्द** – *सनाद्यन्ता धातवः, सनाद्यन्त प्रत्यय, अर्थसंश्लिष्ट।*

**प्रस्तावना** – महर्षि पाणिनि ने 'भूवादयो धातवः'[1] और 'सनाद्यन्ता धातवः'[2] इन दोनों सूत्रों से धातुसंज्ञा का प्रत्याख्यान किया है। पाणिनीय व्याकरण में महार्णव के नाम से अभिकृत तिङन्त की परिधि में ही सनाद्यन्त की गणना की जाती है, जिनकी प्रकृति धातु हो अथवा प्रातिपदिक। धातु अथवा नाम के साथ सनाद्यन्त का प्रयोग होने पर निष्पन्न सनाद्यन्त की 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा होती है। धातुसंज्ञा होने के फलस्वरूप लादेश होता है। लादेश होने पर तिङ्. प्रत्यय होता है। अतः सनाद्यन्त का तिङन्त स्वरूप व्यवहारार्थ होता है। सनाद्यन्त धातुओं का अर्थवैशिष्ट्य पाणिनीय धातुपाठ पठित धातुओं से भिन्न होता है। ये सनादि प्रत्यय पाणिनीय धातुपाठ पठित धातु से विहित होकर भी पृथक् हो जाते हैं।

नाम से विहित सनादि प्रत्यय से निष्पन्न सनाद्यन्त भी धातु का ही विनिर्माण करते हैं जो पाणिनीय व्याकरण के तिडन्त का एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण पक्ष कहा जा सकता है। सनादि प्रत्ययों से निर्मित होने के कारण इस प्रकार धातु को कृत्रिम धातु कहा जा सकता है।

**उद्देश्य** – सनादि प्रत्ययों की यदि धातुसंज्ञा नहीं की जाती तो प्रेरणार्थक पाठयति, पिपठिषति, पापठ्यते इत्यादि तिडन्त, पदों की सिद्धि संभव नहीं हो पाती। 'पठ्' धातु पाणिनीय धातुपाठ में उपदिष्ट होने के कारण 'भूवादयो धातवः' से उसकी धातुसंज्ञा हो जाती है। धातुसंज्ञा होने के फलस्वरूप तिबादि प्रत्यय लगकर पठति इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं; किन्तु प्रेरणाप्रद पाठयति रूप की सिद्धि के लिए पठ् धातु से णिच् प्रत्यय होकर पाठि बनता है। धातुपाठ में पठ् धातु का पाठ किया गया है पाठि का नहीं। जब पाठि धातु का पाठ ही नहीं तो तिबादि प्रत्ययों की संगति कैसे हो पाती। अतः महर्षि पाणिनि ने 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से पाठि की भी धातुसंज्ञा कर इसका निराकरण किया है। धातुपाठ में पठित धातु को औपदेशिक अथवा मूलधातु कहा जाता है। उन्हीं मूलधातुओं में सनादि प्रत्यय लगने से निर्मित धातुओं को कृत्रिम धातु कहा जा सकता है। अष्टाध्यायी में परिगणित सनादि 12 प्रत्यय निम्नलिखित कारिका में द्रष्टव्य है –

सन्– क्यच्– काम्यच्– क्यड्.– क्यषोडथाचार क्विब्– णिज्– यड.स्तथा।
यगाय ईयड्. णिड्. चेति द्वादशामी सनादयः।।

उक्त प्रत्ययों के योग से प्रत्ययान्त समुदाय की 'सनाद्यन्ता धातवः' से पुनः धातुसंज्ञा हो जाती है। अतः सनाद्यन्त धातु को मूलधातुवत् माना जाता है।

णिच् प्रत्यय 'प्रत्ययः'[3] और 'परश्च'[4] के अधिकार में पढ़ा गया है। यह णिच् प्रत्यय 'हेतुमति च'[5] सूत्र से विहित है। णिच् प्रत्ययान्त वाक्य के सन्दर्भ में द्रष्टव्य तथ्य है कि यहाँ कर्त्ता दो प्रकार के होते हैं –

(1) प्रयोज्य कर्त्ता, (2) प्रयोजक कर्त्ता।

गुरुः शिष्यं पाठयति – इस वाक्य में दो वाक्य होते हैं –

(1) शिष्यः पठति।

(2) गुरुः पाठयति।

प्रथम वाक्य में शिष्य पढ़ता है अतः वह कर्ता है। शिष्य को गुरु पढ़ाते हैं इसलिए गुरु पढ़ानेवाला प्रेरक कर्ता भी है। गुरु के कर्ता होने से यहाँ दो कर्ता हुए। प्रथम कर्ता शिष्य प्रयोज्य कर्ता एवं उसे पठन कार्य में लगाने वाला दूसरा कर्ता प्रयोजक कर्ता कहा जाएगा। प्रयोज्य कर्ता के साथ क्रिया पठ् धातु का पठति रूप होगा; किन्तु प्रयोजक कर्ता के साथ उसी पठ् धातु से णिच् प्रत्यय लगाकर निष्पन्न क्रिया पाठयति का प्रयोग होगा। पठति – पठनं करोति, पाठयति – पठितुं प्रेरयति। यहाँ पठति में णिच् प्रत्यय नहीं लगा है, अतः अण्यन्तावस्था की क्रिया कही जाती है। पाठयति में णिच्, प्रत्यय् लगा है अतः ण्यन्तावस्था की क्रिया कही जाती है।

गुरुः शिष्यं, पाठयति – इस वाक्य में कर्ता गुरु की 'तत्प्रयोजको हेतुश्च'[6] सूत्र से हेतुसंज्ञा एवं कर्तृसंज्ञा होती है। सर्वविदित है कि धातु के दो अर्थ होते हैं – (1) व्यापार और (2) फल। पठन क्रिया की सिद्धि में शिष्य स्वतंत्र रूप से विवक्षित है। अतः 'स्वतंत्रः कर्त्ता'[7] से शिष्य की कर्तृसंज्ञा होगी; परन्तु जब 'गुरूःपाठयति' वाक्य कहा जाएगा तब उस अवस्था में गुरु में पठन कार्य का व्यापार नहीं होने के कारण वह कर्ता नहीं बन पा रहा था; इसलिए 'तत्प्रयोजको हेतुश्च' सूत्र से गुरु की हेतुसंज्ञा के साथ–साथ कर्तृसंज्ञा करने की आवश्यकता हुई। तत्पश्चात् 'हेतुमति च' सूत्र से प्रयोजक के व्यापार में णिच् प्रत्यय सिद्ध हो जाता है और कर्तृसंज्ञा होने से 'लःकर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः'[8] सूत्र द्वारा कर्ता में लट् आदि हो जाते हैं।

यहाँ ध्यातव्य है कि प्रयोजक कर्ता चेतन ही हो सकता है; क्योंकि उसमें प्रेरणा देने का सामर्थ्य सम्भव है, तथापि औपचारिक रीति से अचेतन को भी प्रयोजक मान लिया जाता है। 'हेतुमति च' सूत्र से प्रयोजक (प्रेरक कर्त्ता) के व्यापार (पढ़ाना) वाच्य होने पर धातु से णिच् प्रत्यय का विधान किया जाता है। स्वतंत्र कर्त्ता का प्रयोजक हेतु कहलाता है, उसका व्यापार है प्रेरित करना। उस प्रेषण व्यापार के वाच्य होने पर किसी भी गण के धातु से णिच् प्रत्यय विहित होता है। णिच् प्रत्यय जुड़ने पर यह (प्रेरक) प्रेषण अर्थ की अभिव्यक्ति हो जाती है। फलतः पठ् से णिच् प्रत्यय लगाने पर धातु का स्वरूप पाठि हो जाता है। पठ् का अर्थ पढ़ना परन्तु पाठि का अर्थ पढ़ाना हो जाता है। पठन्तं प्रेरयति इति पाठयति। पठ् धातु से 'हेतुमति च' सूत्र से णिच् प्रत्यय होता है। पठ् णिच् की स्थिति में णिच् प्रत्यय के (ण्) णकार का 'चुटू' सूत्र से तथा चकार (च्) का 'हलन्त्यम्'[10] सूत्र से इत्संज्ञा एवं 'तस्य लोपः'[11] सूत्र से इत्संज्ञक ण् एवं च् का लोप होकर पठ् इ होता है। णकार की इत्संज्ञा होने के कारण इ (णिच्) णित् कहलाता है। अतः पठ् इ की स्थिति में 'अत उपधायाः'[12] सूत्र से पठ् के उपधा अकार की वृद्धि होकर पाठ् इ = पाठि णिजन्त रूप बनता है। इस पाठि के णिजन्त होने के कारण इसकी 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा होती है। धातुत्वात् लट्.लकार के प्रथम पुरूष के एकवचन की विवक्षा में तिबादेशादि कार्य होने पर पाठयति रूप होता है।

णिच् प्रत्यय लगने के पश्चात् धातु णिजन्त हो जाता है। णिजन्त धातुओं से 'णिचश्च' सूत्र से उभयपद का विधान किया गया है। णिच् एक प्रत्यय है अतः 'प्रत्यक्षग्रहणे तदन्ताः ग्राहया' इस परिभाषा से णिच् से तदन्त विधि होकर णिजन्तात् बन जाता है। 'णिचश्च' सूत्र के अनुसार णिजन्त से पर आत्मनेपद प्रत्यय हो जिसके क्रिया का फल कर्ता को मिलता है; अर्थात् कर्तृगामी हो। यदि क्रिया का फल कर्तृगामी नहीं हो तो 'शेषत्कर्तरि परस्मैपदम्'[14] सूत्र से परस्मैपद हो जाता है। अतः णिजन्त धातु से आत्मनेपद एवं परस्मैपद दोनों ही प्रत्यय होते हैं। फलतः प्रायः सभी णिजन्त धातु उभयपदी हैं। कतिपय आपवादिक सूत्र द्वारा प्राप्त कर्तृगामी क्रियाफल न होने पर भी आत्मनेपद का ही विधान करते हैं। यथा 'णेरणौयत्कर्मणैचेत्स कर्ताऽनाध्याने'[15] इत्यादि सूत्र इस विषय में ध्यातव्य है।

प्रेरणा के मुख्यतः पाँच भेद माने जाते हैं – प्रेषण, अध्येषण, अनुमति, उपदेश और अनुग्रह।

**प्रेषण** – सेवक आदि छोटे को प्रेरित करना प्रेषण कहलाता है।

**अध्येषण** – गुरु आदि बड़ों को या समवयस्क मित्र आदि को प्रेरित करना अध्येषण कहलाता है।

**अनुमति** – जब आज्ञा से कोई कार्य करना या कराना होता है तो अनुमति रूप प्रेरणा होती है।

**उपदेश** – जब किसी कार्य विशेष की सलाह दी जाती है तो उसे उपदेश कहा जाता है। जैसे– किसी बीमार व्यक्ति को ससमय दवा खाने या क्वाथ पीने की सलाह दी जाती है तो इस प्रकार के चिकित्सक के वचन उपदेश रूप प्रेरणा कहलाते हैं।

**अनुग्रह** – यदि किसी की सहायता से कोई कार्य सफल होता है तो इस सहायता कर्मी की सहायता रूपी प्रेरणा अनुग्रह रूप प्रेरणा होती है।

फलतः इन सभी प्रयोजकनिष्ठप्रेरणा आदि के अर्थ में णिच् प्रत्यय होता है।

णिच् प्रत्यय की प्रवृत्ति द्विधा देखी जाती है – (1) प्रातिपदिक से
(2) धातु से।

(1) प्रातिपदिक से विहित होने वाले प्रत्यय नामधातु प्रकरण में पढ़े गए हैं। उन प्रत्ययों में 'मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेश्यो'[16] सूत्र से णिच् प्रत्यय का विधान किया गया है। चुरादिगण पठित 'सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्म वर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्'[17] सूत्र से विधीयमान णिच् की प्रकृति चुरादिगणीय धातु के साथ सूत्र पठितं प्रातिपदिकों का पाठ किया गया है। यथा– माणवकं मुण्डयति इस वाक्य में मुण्डयति णिच्प्रत्ययान्त क्रिया रूप है। मुण्डयति – मुण्ड इस प्रातिपदिक से 'मुण्डमिश्रश्लक्ष्ण......' सूत्र से णिच् प्रत्यय होकर मुण्ड णिच् होता है। णिच् के णकार (ण्) की 'चुटू' सूत्र से तथा चकार (च्) की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा एवं 'तस्यलोपः' सूत्र से लोप होकर मुण्ड इ होता है। णिच् परे होने से अदन्त मुण्ड के अन्तिम अ का 'अतो लोपः'[18] सूत्र से लोप होकर मुण्ड् इ रूप होता है। अ का लोप होने के बाद मुण्ड् के लघु उपद्यउ का 'पुगन्तलघूपधस्य'[19] सूत्र से गुण प्राप्त है वह गुण नहीं होगा; क्योंकि अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' सूत्र से 'अतो लोपः' सूत्र से लोप किए गए अ को स्थानिवत् कर देता है। वह लुप्त अ दिखता है, अतः गुण न होकर मुण्ड् इ = मुण्डि यह णिजन्त रूप होता है। णिजन्त मुण्डि की 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा होती है। लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः' सूत्र से लादेश होता है। लादेश होने पर कर्ता के अर्थ में प्रथम पुरूष एकवचन की विवक्षा में तिप् आदेश होकर मुण्डि तिप् होता है। तिप् के मुण्डि पकार (प्) की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा एवं 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप होकर मुण्डि ति होता है। कर्ता अर्थ में होने के कारण 'कर्तरि शप्'[20] से शप् विकरण होकर मुण्डि शप् ति होता है। शप् के शकार (श्) का लशक्वतद्धिते[21] सूत्र से तथा पकार (प) का 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होती है तथा इत्संज्ञक श् एवं प् की 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप होकर मुण्डि अ ति स्वरूप होता है। मुण्डि अ ति की स्थिति में 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः'[22] सूत्र से आर्धधातुक णिच् परे होने से गुण होकर मुण्ड् ए अ ति स्वरूप होता है। 'एचोऽयवायावः'[23] सूत्र से ए का अय् आदेश होकर मुण्ड् अय् अति

की स्थिति में 'अज्झीणं पेला संयोज्यम्' इस परिभाषा से स्वरहीन ड् तथा य् को पर अ से जोड़कर मुण्डयति रूप होता है।

2. जब धातु से णिच् प्रत्यय का विधान किया जाता है तो वह णिच् दो अर्थों में देखा जाता है –

(i) स्वार्थिक णिच्

(ii) अस्वार्थिक णिच्

(i) स्वार्थिक णिच् – धातु से लकार आने के पूर्व ही धातु से णिच् प्रत्यय होता है। यह णिच् किसी अर्थ को लेकर नहीं आता। जिस प्रत्यय में किसी अर्थ विशेष की अपेक्षा नहीं होती वह प्रत्यय स्वार्थिक होता है। यह स्वार्थिक प्रत्यय प्रकृति के अर्थ को ही परिपुष्ट करता है जैसा कि 'अनिर्दिष्टार्थाः प्रत्ययाः स्वार्थे भवन्ति' इस वचन से ज्ञात होता है। चुरादिगणीय धातुओं से स्वार्थ में ही णिच् प्रत्यय होता है इस णिच् के लगने से धातु के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(ii) अस्वार्थिक णिच् – णिजन्त प्रकरण में 'हेतुमति च' सूत्र से जिस णिच् का विधान किया गया है उसे अस्वार्थिक णिच् कहा जा सकता है; क्योंकि यह णिच् हेतुमत् अर्थ में होता है। हेतु अर्थ में होने के कारण इस णिच् को 'हेतुमण्णिच्' कहते हैं। यह 'हेतुमण्णिच्' सभी धातुओं से विहित होता है।

चुरादिगणीय धातुओं से स्वार्थिक णिच् लगने पर जब 'हेतुमण्णिच्' प्रत्यय लगाया जाए तो उस परिस्थिति में णिच् प्रत्यय होने पर 'णेरनिटि'[24] सूत्र से अनिट् आदि आर्धधातुक प्रत्यय परे रहने पर णिच् प्रत्यय का लोप हो जाता है। अतः दो णिच् प्रत्यय होने पर 'णेरनिटि' सूत्र से पूर्व वाले णिच् प्रत्यय का लोप हो जाता है। उदाहरणार्थ – चुर धातु से 'चुरादिभ्यो णिच्' सूत्र से णिच् प्रत्यय होने पर चुर् णिच् की स्थिति में 'हेतुमति च' सूत्र से णिच् प्रत्यय करने पर चुर णिच् णिच् स्वरूप होता है। इस दशा में 'णेरनिटि' सूत्र से पूर्व स्थित णिच् प्रत्यय का लोप होकर चुर् णिच् रूप बनता है। णिच् के अनुबन्ध णकार (ण्) का 'चुटू' सूत्र से तथा चकार (च्) का 'हलन्व्यम' से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप होकर चुर् इ होता है। चुर् इ की स्थिति में णिच् की 'आर्धधातुकं शेषः' से आर्धधातुक संज्ञा और 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधाभूत चुर के उकार को गुण होकर च् ओर् = चोर इ = चारि, रूप होता है। सनाद्यन्न णिच् प्रत्यय परे होने से 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से णिजन्त चोरि की धातुसंज्ञा होती है। धातुत्वात् लादेश होता है और लट्लकार प्रथम पुरूष एकवचन की विवक्षा में तिप् प्रत्यय हो चोरि 'कर्तरि शप्' तिप् होता है। 'कर्तरि शप्' से तिप् को शप् विकरण हो चोरि शप् तिप् होता है। तिप् के प् का 'हलन्त्यम्' सूत्र से एवं शप् के श् का 'लशक्वताद्धिते' सूत्र से तथा प् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से इत्संज्ञक वर्णों का लोप होकर चोरि अति रूप होता है। पुनः चोरि के इ का 'सवि धातुकार्धधातुकयोः से गुण होकर चोर् ए अ ति स्वरूप होता है। चोर् ए अ ति की स्थिति में 'एचोऽयवायावः' सूत्र से ए का अय् आदेश होकर चोर अय् अ ति स्वरूप होता है। 'अच्क्षीणं परेण संयोज्यम्' इस परिभाषा से स्वरहीन र् को पर अ से एवं य् को पर अ से मिलाकर चोरयति रूप होता है।

अतः णिजन्त प्रत्यय की प्रकृति अजन्त एवं हलन्त सभी धातुओं एवं प्रातिपदिकों के साथ होती है।

**संदर्भ :–**


1. पाणिनीय व्याकरण – 1.3.1
2. पाणिनीय व्याकरण – 3.1.32
3. पाणिनीय व्याकरण – 3.1.1
4. पाणिनीय व्याकरण – 3.1.2
5. पाणिनीय व्याकरण – 3.1.26
6. पाणिनीय व्याकरण – 1.4.55
7. पाणिनीय व्याकरण – 1.4.54
8. पाणिनीय व्याकरण – 3.4.69
9. पाणिनीय व्याकरण – 1.3.7
10. पाणिनीय व्याकरण – 1.3.3
11. पाणिनीय व्याकरण – 1.3.9
12. पाणिनीय व्याकरण – 7.2.116
13. पाणिनीय व्याकरण – 1.3.74
14. पाणिनीय व्याकरण – 1.3.78
15. पाणिनीय व्याकरण – 1.3.67
16. पाणिनीय व्याकरण – 3.1.21
17. पाणिनीय व्याकरण – 3.1.25
18. पाणिनीय व्याकरण – 6.4.48
19. पाणिनीय व्याकरण – 7.3.86
20. पाणिनीय व्याकरण – 3.1.68
21. पाणिनीय व्याकरण – 1.3.8
22. पाणिनीय व्याकरण – 7.3.84
23. पाणिनीय व्याकरण – 6.1.78
24. पाणिनीय व्याकरण – 6.4.51
25. पाणिनीय व्याकरण – 3.4.114